International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2018; Page No. 63-64

नवगीत की अवधारणा एवं प्रकृति

उपासना
शोध–छात्रा, हिन्दी–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

'नवगीत' की अवधारणा बहुत प्राचीन नहीं, लेकिन 'नवगीत' को निराला से प्रारंभ माना जाता है लेकिन निराला का कृतित्व कई नवीन प्रवृत्तियों का समुच्चय है, इसलिए किसी एक प्रवृत्ति को पूर्णरूप से ढूँढना ठीक नहीं, लेकिन कुछ यथार्थ दबाव के कारण निराला के गीत को 'नवगीत' की सम्यक् भूमिका प्रस्तुत करने वाले थे जो दो धाराओं में विभक्त हो गए। एक तो विशुद्ध नवगीतों 'काले काले बादल आये', न आये वीर जवाहर लाल' जैसे गीतों में जो न केवल भाव वरन् छन्द आदि की दृष्टि से शुद्ध नवगीत कहे जा सकते हैं।

बच्चन, अँचल आदि के रोमानी गीतों की प्रकृति में जो स्वरूप उभरकर सामने आया वह कालान्तर में 'नवगीत' से जुड़ गया। भावुकता से सम्बन्धित गीतों से 'नवगीत' तक की यात्रा में प्रगतिवाद की भूमिका नहीं हैं। प्रगतिवाद ने अपने समय के अधिकतर कवियों को प्रभावित किया है। डॉ॰ रामदरश मिश्र ने लिखा हैं – "इन्हीं दिनों प्रगतिवाद की धारा साहित्यिक गीतों को लोकगीतों के समीप लाना चाहती थी। इस धारा के प्रयोग में अज्ञेय गिरिजाकुमार, भारती, नरेश मेहता भी अछूते नहीं रहें।[1]

प्रगतिवादी गीतकारों ने जीवन के यथार्थ को परखने और चित्रित करने की दृष्टि प्रदान की। मार्क्सवादी चिन्तन के फलस्वरूप गीत जीवन के बुनियादी और ठोस सरोकार से जुड़ने लगा। छायावादोत्तर व्यक्ति के निजी सुख–दुःख से जुड़े हुए थे। बच्चन अंचल ने गीतों में सहज अभिव्यक्ति को व्यक्त किया वहां समकालीन कवियों ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक उथल–पुथल से अलग रखा, इस आत्मकेन्द्रित गीतधारा की विकृत परिणति कवि सम्मेलनों में हुई। ऐसे में 'गीत' के नयेपन की मांग स्वाभाविक थी।[2] नयी कविता से सम्बद्ध कवियों की कुछ गीतपरक रचनाएँ इस बात का प्रमाण है कि यह नयेपन की मांग सीमित दायरे में न थी। वास्तविकता यह थी कि राजेन्द्रप्रसाद सिंह, रवीन्द्र भ्रमर और रामदरशमिश्र जैसे नवगीत के प्रमुख हस्ताक्षर नवगीत को नयीकविता के बराबर खड़ा नहीं करना चाहते थे। केदारनाथ सिंह ने कहा कि 'गीत' ने नई कविता की उपलब्धि से काफी लाभ उठाया है।[3]

नवगीत को कई कवियों ने छठे दशक से स्वीकार किया है। डॉ॰ रवीन्द्रभ्रमर, शम्भूनाथसिंह, बालस्वरूप राही, रामनरेश पाठक, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, जयप्रकाश सिंह ने अपने लेखों में 'नवगीत' की संज्ञा का प्रयोग किया है। डॉ॰ कुंवरपाल सिंह ने इसे 'आधुनिक' या 'नये गीत' कहना उचित समझा है। डॉ॰ शम्भूनाथ सिंह के विचार में 'नवगीत' एक सापेक्षित शब्द है किसी भी युग में 'नवगीत' की रचना हो सकती है। गीत रचना की परम्परा को छोड़ भावबोधि को छोड़ नवीन पद्धति और विचारों के नवीन भावों आयामों को अभिव्यक्त करने वाले 'नवगीत' होंगे।"[4]

इस प्रकार 'नवगीत' को सातवें दशक से प्रारंभ माना जाता है। राजेन्द्र प्रसाद द्वारा सम्पादित 'गीतांगिनी' (1958) नवगीत का प्रारंभ माना जाना चाहिए। नवगीत के प्रवर्तक पर बड़ा मतभेद हैं फिर भी उमाकान्त मालवीय वरिष्ठ गीतकारों ने 'गीतांगिनी' से ही नवगीत का प्रारंभ माना है। 'गीतांगिनी' के सम्पादकीय में राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 5 तत्त्वों को माना हैं – प्रगति विकास की दृष्टि से उन रचनाओं का बहुत मूल्य हैं। नयी कविता के सात मौलिक तत्त्व और नवगीत के 5 विकसनशील तत्त्व एक आंदोलन के रूप में नवगीत 1960 के आसपास आया। वासन्ती (वाराणसी) पत्रिका में शम्भूनाथ सिंह, रामदरश मिश्र, वीरेन्द्र मिश्र और रवीन्द्र भ्रमर आदि ने लेखों में 'नवगीत' पर लेख लिखे है। इन्हीं साहित्यकारों ने अपनी ताज़गी और संवेदना से नवगीत की सार्थकता को स्थापित किया है।

नवगीत की रचनाधर्मिता पर वीरेन्द्र मिश्र, हरीश भदानी, विद्यानन्दन, सोमठाकुर, महेश उपाध्याय, रमेश रंजक, अनूप अशेष, नचिकेता, कुंवर बैचेन, ओम प्रभाकर, सुरेश कुमार, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' आदि ने 'नवगीत' की प्रवृत्तियों को विकसित किया है।

'नवगीत' लोकगीत से जुड़ा हुआ हैं। प्रारंभ में यह ग्रामांचल के बिम्बों और लोक से जुड़ा हुआ था। नवें दशक में वैचारिकता के स्तर पर जनधर्मी और जनवादी होता गया। कुछ रचनाकार 'जनगीत' भी कहते हैं। कुछ छायावादोत्तर गीतकारों ने गीत से हटकर लम्बी कविता कहना प्रारंभ कर दिया। 'भरी सड़क पर' (राजेन्द्र प्रसाद सिंह) खुले अलाव पकायी घाटी (हरीश भदानी) हर सिंगार कोई तो हो, (महेश्वरी तिवारी) 'दरिया का पानी' (रमेश रंजक) संग्रहों के बहुत से गीत आम आदमी की पक्षधरता से जुड़े है।

प्रारंभ में नवगीतकार अनुभूत जीवन दृष्टि और अभिव्यक्ति के स्तर पर कुछ भिन्न दिखाई देते हैं। कुछ गीत लीकों से हटकर स्वयं के अनुभव, सौंदर्य बोध के अनुसार जीवन सत्यों को ईमानदारी से व्यक्त किया है।[5]

नवगीतों में जनधर्मी को प्रमुख आयाम दिया गया है। व्यवस्था का विरोध, जनभाषा, लोकगीतों की मिठास एवं सम्प्रेषण की नयी–नयी भंगिमाएँ प्रयुक्त की गई हैं।

नवगीत आमजन की व्यथा को व्यक्त करता है। उसकी जनधर्मिता विस्तृत हैं। एक ओर महानगर की विसंगतियां हैं तो दूसरी ओर यथार्थ का चित्रण किया गया है। कहीं राजनीतिक संदर्भों में तीखी व्यंजना की गई हैं –

"देश का आकाश अपना है
जहाँ चाहो मुड़ो
परों में ही श्वेत हंसी–चाल
तैरती हो शांति स्वर में
दृष्टि में हो ताल।"[6]

राजनीतिक स्तर पर जनसाधारण की यातना का वर्णन किया है

"एक इमला चल रहा था
और लेखन खल रहा था
बाँसुरी नीरो बजाता
रोम सारा जल रहा था
तंग पिंजरों में अंधे, मूक बहरे
बन्द थे संवाद"[7]

सातवें दशक के हिन्दी साहित्य में जनतांत्रिक व्यवस्था के ऊपर जनतांत्रिक व्यवस्था के ऊपर अंगुली उठाने का क्रम शुरू हुआ। आजादी मिलने के बाद भी आमजन की आकांक्षाएँ अपूर्ण रही। न प्रजा है न तन्त्र आदमी के विरूद्ध षडयन्त्र। कवि रवीन्द्र नाथ (भ्रमर) ने भयावह स्थिति का उल्लेख किया है।

"रक्षकों की पहनकर वर्दी
राजपथ पर खड़े बटमार
भेडियों के मुँह लगा है खून
चल रहा है मरण का व्यापारत्र"

'नवगीत' में जहां छायावादी भावबोध और शिल्प का अभाव था वहीं नई कविता में महानगर बोध की वितृष्णा का भाव भी है। यही कारण है कि 'नवगीत' ग्रामीण अंचल से जुड़ा हुआ है। उसकी भाषा भी उसी परिवेश से है। ठाकुर सिंह के कई गीतों में आधी से अधिक शब्दावली आंचलिक हैं।

"आधा मन घरे मोरा
आधा मन बाहिरे
आधा मन लागा मोरा
कुँआरे के साँवरे
सखि ! कहाँ जाऊँ रे, मोको कहाँ ठाँवरे।"[8]

नवगीतों में लोकगीतों की मिठास भी मिलती हैं। बच्चन ने यह कार्य बहुत पहले कर दिया। डॉ॰ रामदरश मिश्र ने "इन गीतों में लोकजीवन की समीपता हैं। उनका आन्दोलनकारी विस्तृत और पूर्वनियोजित स्वर नहीं हैं। ये जीवन के छोटे–छोटे किन्तु सूक्ष्म संवेगों के स्तरों को उद्घाटित करने वाले हैं।"[9] लोकगीतों में नाद सौंदर्य के साथ अकृत्रिम अभिव्यक्ति का जो आकर्षण होता है। वह इन गीतों में भी उपलब्ध है। कवि नईम और रमेश रंजक ने लोक संवेदना और लोकवस्तुओं का वर्णन किया है। डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद सिंह ने धोबियों के लोकगीत पर आधारित है। इसमें टेक लोकगीत की है –

"छियो राम छियो राम छियो
जियो राम जियो राम जियो
न यह समझो। किसी ने दिया
व हमने ले लिया
अजब उलझन भरा नक्शा
दहकत ज़िंदगी का।"[10]

नवगीतकारों ने अभिव्यंजना को सम्प्रेषणीय बनाया है। इन्होंने छन्द को माना है। नई कविता ने छन्द का तिरस्कार किया है। अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणीयता के लिए नवगीतकारों ने लोकधुनों को अपनाया है। मध्ययुगीन छन्द से युक्त मुक्त शैली को अपनाया है। गेय शैली में निम्नपद मर्मस्पर्शी बन पड़ा है।

"दरद बिना बानी बेमानी
दरद निचोरे परबत पाथर
दरद थरै सागर में पानी
गतिमय होत दरद के आखर।"[11]

नवगीतकारों ने अप्रस्तुत विधान को भी प्रस्तुत किया है। नवगीत की प्रारंभ की कृतियों में जहां 'चुटकी भर चाँदनी' 'धूप के जाल', 'हंसती मुंडेर', 'दहका पलाश' आदि प्रयोग मिलते हैं वहाँ परवर्ती रचनाओं में रेल, सीटी, रोगी, डाकिया, फ्रिज आदि अप्रस्तुतों का विधान किया गया है।

'गाँव की बेहद नशीली
नित्य आयातित हवाएँ
गाँव को भरमा रही हैं।"[12]
"डाकिये की तरह
चिट्ठी डालकर मौसम
गुजर जाता है।"[13]

नवगीत अभिव्यक्ति के स्तर पर पठनीय है, रूपवादी नहीं हैं। नयी कविता के जमाने में जब कुछ ही पाठक रह गये थे तब नवगीत ने 'पद्य' के प्रति जनसाधारण की रुचि बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य 'नवगीत' की रचना की।

संदर्भ

1. आज का हिन्दी साहित्य : संवेदना और दृष्टि, पृ॰ 106
2. साहित्यिक निबन्ध : डॉ॰ वेदप्रकाश अमिताभ, पृ॰ 287
3. पाँच जोड़ बाँसुरी, सम्पादक चन्द्रदेव सिंह, पृ॰ 211
4. कविता–64 सम्पादक ओमप्रभाकर, पृ॰ 78–79
5. हिन्दी कविता आधुनिक आयाम : रामदरश मिश्र, पृ॰ 152
6. डॉ॰ रामदरश मिश्र, दिन एक नदी बन गया, पृ॰ 53
7. उमाकांत मालवीय, पृ॰ 24
8. वंशी और मादल, पृ॰ 25
9. आज का हिन्दी साहित्य : संवेदना और दृष्टि, पृ॰ 110
10. आइना 19–30, पृ॰ 15
11. दरिया का पानी, पृ॰ 83
12. छीजता आकाश, पृ॰ 51
13. हरापन नहीं टूटेगा, पृ॰ 42